दिनांक 22/5/2023 को असम विश्वविद्यालय, सिलचर भ्रमण पर
माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया जी का संबोधन

असम विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. राजीव मोहन पंत जी,

विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एवं संकाय सदस्य गण,

अधिकारी और कर्मचारी गण,

मेरे प्यारे विद्यार्थी गण,

एवं उपस्थित देवियों और सज्जनों,

सबसे पहले आप सभी को मेरा हार्दिक अभिनन्दन और बहुत-बहुत बधाई।

आप सभी जानते हैं कि अमृतकाल का ये समय हमारे ज्ञान, शोध और इनोवेशन का समय है। हमें एक ऐसा भारत बनाना है, जिसकी जड़ें प्राचीन परम्पराओं और विरासत से जुड़ी होंगी, और जिसका विस्तार आधुनिकता के आकाश में अनंत तक होगा। हमें अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता, अपने संस्कारों को जीवंत रखना है, अपने स्वर्णिम अतीत को, अपनी विविधता को संरक्षित और संवर्धित करना है, और साथ ही शिक्षा और तकनीक को निरंतर आधुनिक भी बनाना है। इन प्रयासों में असम विश्वविद्यालय जैसे उच्च शैक्षिक संस्थानों की बहुत बड़ी भूमिका है।

असम विश्वविद्यालय वर्ष 1994 में स्थापित एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है। इस विश्वविद्यालय का दिफू में भी एक कैम्पस है। साथ ही विश्वविद्यालय से संबद्ध अन्य 77 कॉलेज भी हैं, जो असम के शैक्षणिक जरूरतों को पूरा करने का काम कर रहे हैं।

मित्रों

हम एक बहुत ही दिलचस्प दौर से गुजर रहे हैं। अमृत काल की हमारी यात्रा शुरू हो चुकी है और हम 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनना चाहते हैं। वैश्विक शांति और सद्भाव बनाए रखने के लिए पूरी दुनिया हमारी ओर देख रही है। कोविड महामारी के बाद भारत एक मजबूत राष्ट्र के रूप में उभरा है। यह देश के मजबूत राजनीतिक नेतृत्व के कारण ही संभव हो पाया है।

हम अगर अपने अतीत को देखना चाहें तो, भारत सदियों से ज्ञान के क्षेत्र में विश्व पर हावी रहा और इसने हर क्षेत्र में योगदान दिया। हमारा प्राचीन भारत विश्व का एक समृद्ध राष्ट्र था और सन 1700 तक, भारत ने विज्ञान, नवाचार, प्रौद्योगिकी, शिक्षा और व्यापार सभी क्षेत्रों में दुनिया पर अपना दबदबा कायम रखा। यह वह पुण्यभूमि है जहां सदियों पहले वेदों और उपनिषदों की उत्पत्ति हुई थी। ये सार्वभौमिक ज्ञान के दुर्लभ उदाहरण हैं जब बाकी दुनिया अभी भी अपनी प्रारंभिक अवस्था में थी।

दिलचस्प बात यह है कि भारत की "गुरुकुल" परंपरा, एक कठोर प्रक्रिया के माध्यम से बच्चों के समग्र विकास पर केंद्रित थी। भारत के

शिक्षाविदों ने सैकड़ों वर्ष पहले पूरे विश्व को 'शून्य' सहित कई आविष्कारों का उपहार दिया।

वराहमिहिर जैसे हमारे सभी प्राचीन महान वैज्ञानिक, एक प्रसिद्ध खगोलशास्त्री आर्यभट्ट, गणितज्ञ भास्कराचार्य, गुरुत्वाकर्षण के गुरु आचार्य चरक, चिकित्सा के जनक आचार्य सुश्रुत, प्लास्टिक सर्जरी के जनक गर्ग मिनी, ज्योतिष एवं ब्रह्माण्ड विज्ञान के जनक आचार्य कपिल, महर्षि भारद्वाज, एविएशन टेक्नोलॉजी में अग्रदूत नागार्जुन, परमाणु सिद्धांत के जनक आचार्य कनद जैसी महान विभूतियां भारत की प्राचीन 'गुरुकुल' प्रणाली के ही उत्पाद थे और उन्होंने एक आधुनिक दुनिया को बनाए रखने और विकसित करने में अभूतपूर्व योगदान दिया।

नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला, वल्लभी आदि प्राचीन शिक्षण संस्थान न केवल हमारे भारत के, बल्कि पूरे विश्व के गौरव थे। देश के विभिन्न हिस्सों से लोग ज्ञान प्राप्त करने के लिए इन संस्थानों में आया करते थे।

परंतु बाद में औपनिवेशिक शासन ने हमारे समृद्ध भारत को धीरे-धीरे बर्बाद कर डाला और बदलते समय के साथ हमारा देश एक गरीब अर्थव्यवस्था में बदल गया।

आजादी के बाद राष्ट्र के पुनर्निर्माण के लिए वर्ष 1951 से पंचवर्षीय योजना के माध्यम से शुरू की गई विकास की प्रक्रिया अर्थव्यवस्था को काफी हद तक बदल सकती थी, परन्तु वह अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं

कर सकी। इसके अलावा वर्ष 1967 की कोठारी आयोग की रिपोर्ट और भारत की सरकार द्वारा गठित नई शिक्षा नीति 1986 की सिफारिशों के बावजूद शिक्षा प्रणाली की मौकले परंपरा काफी हद तक जारी रही।

मित्रों,

अब कुछ वर्षों से हालात बदल चुके हैं। वर्तमान सरकार ने "सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास" पर बल देते हुए देश और समाज के अंतिम व्यक्ति तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सहित सभी सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाने और राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया के सभी नागरिकों की भागीदारी के साथ आगे बढ़ने का लक्ष्य रखा है।

2014 से, भारत में विकास का एक नया प्रतिमान दिखाई दे रहा है और हम खोए हुए गौरव को फिर से हासिल करना चाहते हैं। इसी लक्ष्य के साथ हम आगे बढ़ रहे हैं। आज हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि भारत वर्तमान में दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, जिसके पास विशाल युवा आबादी है। भारत की 50त्न से अधिक जनसंख्या 27 वर्ष से कम आयु की है। चीन, जापान और अमेरिका सहित कई विकसित देशों में युवा आबादी बेतहाशा घटती जा रही है। उनके लिए चिंता का विषय है। जबकि हम उनके विपरीत हैं। भारत का भविष्य सुनहरा है।

इसमें हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति का अहम भूमिका है। हमने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के जरिए समग्र शिक्षा व्यवस्था को सुलभ और उदार बनाने का संकल्प लिया है। शिक्षा के उद्देश्यों के साथ शिक्षा प्रणाली में

बदलाव पर हमारा ध्यान केंद्रित है। यही वजह है कि हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 64 कलाओं पर ध्यान केंद्रित करती है जो प्राचीन पुस्तकों में वर्णित है, जिसका उद्देश्य एक आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण करना है। इस संदर्भ में स्वामी विवेकानंद ने कहा था - "मनुष्य निर्माण और चरित्र निर्माण ही शिक्षा है।"

हम समझते हैं कि गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार योग्य स्नातक तैयार करना नहीं है बल्कि प्रबुद्ध, प्रतिबद्ध, जानकार और कुशल व्यक्तियों का निर्माण करना है। एनईपी में उच्च शिक्षा के इस दृष्टिकोण वाले कार्यक्रमों की परिकल्पना की गई है।

मित्रों,

आप अपने ज्ञान, विवेक और सामर्थ्य के अनुसार समाज एवं राष्ट्र को नई ऊंचाइयों तक पहुँचाने के लिए निष्ठा और समर्पण की भावना से काम करते रहें - यही मेरी अपील है।

आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

धन्यवाद, जय हिन्द।